

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 18, बेलज़ेबुल विवाद, लूका 11:14-36

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 18 है, बेलज़ेबूब विवाद। लूका 11:14-36।

लूक के सुसमाचार पर बिब्लिका ई-व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है। हमारी व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करने के लिए मैं आपको फिर से धन्यवाद देता हूँ। पिछले व्याख्यान में हमने यीशु द्वारा प्रार्थना के बारे में सिखाए जाने के बारे में बात की थी जब एक शिष्य उनके पास आया और उनसे प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहा।

यीशु ने मूल रूप से उन्हें सिखाया या उन्हें वह सिखाया जिसे हम प्रभु की प्रार्थना के रूप में जानते हैं, लेकिन लूका का संस्करण मैथ्यू के संस्करण से थोड़ा अलग है। लूका में, जैसा कि यीशु ने जोर दिया, यीशु एक दृष्टांत बताते हैं जिसमें एक मित्र बहुत ही असामान्य समय पर मिलने आता है, लेकिन वह मित्र दृढ़ता के कारण आकर मदद करने में सक्षम होता है। यीशु उस दृष्टांत का उपयोग इस बात पर जोर देने के लिए करते हैं कि उनके शिष्य मांग सकते हैं और मांगते रह सकते हैं, खोज सकते हैं और खोजते रह सकते हैं, खटखटा सकते हैं और खटखटाते रह सकते हैं, और उन्हें एक पिता मिलेगा जो उनके हित में है, उनकी जरूरतों को पूरा करता है और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

अब, लूका यहाँ एक और चर्चा शुरू करता है जहाँ यीशु एक ऐसी स्थिति में पहुँचने जा रहा है जहाँ उसे भूत-प्रेत भगाने में शामिल होना है, और यह अपने आप में एक ऐसी प्रतिक्रिया को प्रेरित करने जा रहा है जिसके लिए कुछ और चर्चा की आवश्यकता होगी। विद्वानों ने इसे बेलज़ेबुल विवाद के रूप में संदर्भित किया है। और इसलिए, आइए लूका अध्याय 11 से श्लोक 14 तक इस पर एक त्वरित नज़र डालें।

जब हम पाठ को देखते हैं, तो पाठ को पढ़ते समय, हमारे दिमाग में ये चार बातें होती हैं, और हम उन्हें और करीब से देखेंगे। देखें कि यीशु की सेवकाई में शक्ति मुठभेड़ पर भीड़ कैसी प्रतिक्रिया करेगी। और फिर देखें कि कैसे संदेहवादी और जो लोग यीशु पर सवाल उठाने जा रहे हैं, वे उसके काम को एक दुष्ट आत्मा, यानी शैतान का काम मानेंगे।

इसके अलावा, जब हम पद 17 से 26 तक पहुँचते हैं, तो आपको ध्यान से सुनना चाहिए और देखना चाहिए कि यीशु किस तरह से दो-राज्य की अवधारणा और कुछ ऐसी चीज़ों को दिखाते हुए उत्तर देंगे, जिन पर वह ज़ोर देना चाहते हैं। अंत में, आप देखेंगे कि यीशु के उत्तर देने के बाद, वह इसे लगभग एक फटकार में बदल देगा, एक ऐसी पीढ़ी के बारे में बात करके जो संकेतों की तलाश करती है, और एकमात्र संकेत जिसे वे देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं वह योना का संकेत है। तो अब आइए बाइबल के पाठ को पद 14 से पढ़ते हैं।

ईएसवी से पढ़ते हुए। अब, वह एक गूंगा दुष्टात्मा को निकाल रहा था। जब दुष्टात्मा निकल गई, तो गूंगा आदमी बोलने लगा, और लोग अचम्भा करने लगे।

परन्तु उन में से कितने कहते थे, कि वह दुष्टात्माओं के सरदार बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है; और कितने उसे परखने के लिये उस से आकाश का कोई चिन्ह मांगते रहे। परन्तु उस ने उनके मन की बात जानकर उन से कहा, जिस राज्य में फूट पड़ती है, वह उजड़ जाता है, और जिस घर में फूट पड़ती है, वह नाश हो जाता है। और यदि शैतान भी अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य कैसे बना रहेगा? क्योंकि तुम कहते हो, कि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ।

और यदि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। परन्तु यदि मैं परमेश्वर की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ पहुँचा है। जब एक बलवान मनुष्य पूरी तरह से हथियार बाँधकर अपने घर की रखवाली करता है, तो उसका माल सुरक्षित रहता है।

परन्तु जब कोई उससे अधिक बलवान उस पर आक्रमण करके उसे पराजित कर देता है, तो वह उसके हथियार छीन लेता है, जिस पर उसका भरोसा था, और उसे गिरा देता है। जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरुद्ध है। और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखर जाता है।

पद 24 से: जब अशुद्ध आत्मा किसी मनुष्य से निकल जाती है, तो वह विश्राम की खोज में निर्जल स्थानों में फिरती है। और जब कोई नहीं पाती, तो कहती है, मैं अपने उसी घर में जहाँ से आई थी, लौट जाऊँगी।

और जब वह आती है, तो घर को साफ-सुथरा और व्यवस्थित पाती है। फिर वह जाती है और अपने से भी ज़्यादा बुरी सात और आत्माओं को लाती है, और वे वहाँ घुसकर रहने लगती हैं। और व्यक्ति की आखिरी हालत पहली से भी बदतर हो जाती है।

आइए इस पर नज़र डालना शुरू करें, और मैं बाद में आयत 27 से शुरू करूँगा, और फिर हम वहाँ से इस बेलज़ेबुल विवाद को देखेंगे। सबसे पहले, आइए देखें कि भीड़ कैसे प्रतिक्रिया करेगी और यहाँ क्या हो रहा है। हमें यहाँ एक बहुत ही दिलचस्प स्थिति मिलती है।

यीशु ने वही किया जो उसने लूका के सुसमाचार में पहले ही कर दिया था। हम जानते हैं कि यहूदी आराधनालय में भी यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाला था। इसलिए, लूका में यीशु की सेवकाई में यह कोई नई बात नहीं है।

यीशु दुष्ट आध्यात्मिक गतिविधियों से निपटने में शामिल रहे हैं और आगे भी शामिल रहेंगे। लेकिन यहाँ, भीड़ से जो उभर कर आता है, वही आगे होने वाली चर्चा के लिए माहौल तैयार करता है। यह तथ्य कि वह व्यक्ति कुछ समय के लिए गूंगा था, उसे एक बीमारी के रूप में समझा जाना चाहिए था जो उस व्यक्ति के जीवन को जकड़ रही थी या उस पर कब्ज़ा कर रही थी।

लेकिन जब यीशु आते हैं, तो यीशु उस विशेष स्थिति को आध्यात्मिक स्थिति के रूप में देखते हैं। मुझे यहाँ स्पष्ट करना चाहिए कि प्राचीन यहूदी संस्कृति में, शारीरिक बीमारी को आध्यात्मिक कारण से जोड़ना असामान्य नहीं है। इसलिए कभी-कभी कोई बीमार होगा, और ऐसा इसलिए होगा क्योंकि यह माना जाएगा कि वह व्यक्ति बीमार है या कुछ और, उस व्यक्ति ने पाप किया है या उसने ईश्वर के विरुद्ध कुछ किया है, और यही कारण है कि ये परिणाम सामने आ रहे हैं।

यहाँ, हालाँकि, जो कुछ हो रहा है वह बहुत दिलचस्प है क्योंकि यीशु इस यात्रा पर गलील से यरूशलेम की ओर बढ़ रहे हैं। लोगों की सहज प्रतिक्रिया उनके काम को एक दुष्ट आध्यात्मिक प्राणी के लिए जिम्मेदार ठहराना है। मैं यह भी नहीं कह रहा हूँ कि यहोवा शायद ऐसा इसलिए कर रहा है क्योंकि किसी ने यहोवा के खिलाफ पाप किया है।

तो, आइए हम विस्मय और भीड़ की प्रतिक्रिया के संदर्भ में कुछ बातों पर गौर करें। सबसे पहले, हम यहाँ देखते हैं कि भीड़ को इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि जो गूंगापन हो रहा था उसका आध्यात्मिक संबंध था। भूत भगाने की सफलता के बारे में कोई सवाल नहीं उठाया गया था क्योंकि यीशु ने वास्तव में दुष्टात्मा को बाहर निकाल दिया था और व्यक्ति सामान्य स्थिति में वापस आ गया था।

भीड़ को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि यह घटना किस नाटकीय तरीके से घटी। वहाँ, हमें कुछ संदेह भी देखने को मिला। तो, आप देखिए, जो लोग आस-पास हैं, वे भी बुतपरस्त परंपरा में एक विशेष नाम पर विश्वास करते हैं और उसके बारे में जानते हैं।

एक आध्यात्मिक मुखिया, अगर आप चाहें तो शैतान, जिसे बेलज़ेबुल के नाम से जाना जाता है, उस देवता से निकला है जिसके बारे में हम बुतपरस्त परंपरा बाल से जानते हैं। इनमें से कुछ प्रजनन देवता इस व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए आए हैं। वे कहते हैं कि यीशु इस आत्मा की शक्ति से जागृत होता है, जिसे बाद में, जैसा कि ल्यूक समझाता है, उस संबंध में शैतान के जागरण के रूप में वर्णित किया जाएगा।

इसका मतलब यह है कि यीशु के काम को सबसे शक्तिशाली और सबसे शक्तिशाली दुष्ट आध्यात्मिक एजेंट के रूप में माना जाता है। उन्होंने यीशु के काम पर जादू और शैतानी गतिविधि का प्रक्षेपण किया। ऐसा करके, वे चुनौती दे रहे हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में कौन थे और चमत्कारी कार्य करने की उनकी शक्ति का स्रोत कौन था।

यह वास्तव में एक बड़ा आरोप है। अन्यत्र, यीशु ने अन्य सुसमाचार प्रचारक लेखों की तरह ही यह भी कहा कि लोगों को ऐसे आरोप लगाना बंद कर देना चाहिए क्योंकि जो लोग उसके विरुद्ध पाप करते हैं उन्हें क्षमा किया जा सकता है, लेकिन जो लोग परमेश्वर की शक्ति के सापेक्ष पवित्र आत्मा की शक्ति के विरुद्ध पाप करने की हिम्मत करते हैं, उन्हें कभी क्षमा नहीं किया जाएगा। लेकिन लूका में यह भीड़ यही कर रही है।

लूका कथा के उस हिस्से को प्रवचन में नहीं लाएगा, लेकिन वह हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करेगा कि यह वास्तव में यहाँ एक प्रमुख मुद्दा है। इस विशेष विवरण में निहित है कि यीशु उन्हें क्या बताता है जिसके बारे में हमें जानना चाहिए। यीशु उन्हें बताता है कि वे जानते हैं

कि उनके अपने बच्चे, उनके अपने लोग, दुष्टात्माओं को निकालते हैं, लेकिन वे ऐसा उन शक्तियों का उपयोग करके करते हैं जो परमेश्वर की नहीं हैं।

दूसरे शब्दों में, भूत भगाने की प्रथा तो जानी जाती थी, लेकिन यह यीशु की सेवकाई के लिए अद्वितीय नहीं थी। यहाँ जो बात अद्वितीय है वह है शक्ति का स्रोत जो इस उपचार को प्रभावी बनाने के लिए प्रयोग किया जा रहा है। यीशु ने उन्हें दो राज्यों के बारे में यह कहानी सुनाकर उत्तर दिया क्योंकि उन्होंने उसे उस हद तक भड़का दिया है जिसे वह बर्दाश्त नहीं करना चाहता।

उन्होंने उसे यह कहने के लिए उकसाया है कि वह अपने ही खिलाफ काम कर रहा है क्योंकि परमेश्वर का राज्य और परमेश्वर के राज्य के शत्रु, अगर आपको याद हो तो मैंने इन व्याख्यानों में उल्लेख किया है, तीन प्रकार के हैं। पाप, शैतान और मृत्यु। यहाँ वे उस पर आरोप लगा रहे हैं कि वह शैतान की ओर से काम कर रहा है, और यीशु इसे स्वीकार नहीं करने वाला है।

अध्याय 11 की 20वीं आयत में वे कहते हैं, " लेकिन अगर मैं ईश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो ईश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है। जब एक मजबूत आदमी, पूरी तरह से हथियारबंद होकर, अपने महल की रखवाली करता है, तो उसका सामान सुरक्षित रहता है। लेकिन जो ताकतवर है, जो उस ताकत को दर्शाता है जो उस ताकत से भी ज्यादा ताकतवर है जिसका वे जिक्र कर रहे हैं, जब वह सामने आता है, तो वह तथाकथित ताकतवर आदमी पर विजय पा लेता है।

फिर वह बताता है कि उसकी शक्ति को कैसे देखा और परिभाषित किया जाना चाहिए। असल में, यीशु इन दो प्रतिस्पर्धी राज्यों के बारे में बात कर रहे हैं। अंधकार का राज्य, शैतान का राज्य, अथाह शैतान द्वारा शासित राज्य, आप इसे नाम दें।

और परमेश्वर का राज्य और परमेश्वर के राज्य में काम करने वाली शक्ति। इस परिचर्चा से ठीक पहले, यीशु ने पहले ही कहा था कि यदि परमेश्वर के बच्चे उससे जो कुछ भी चाहते हैं, मांगते हैं, तो स्वर्ग में पिता उन्हें पवित्र आत्मा देने में भी प्रसन्न होते हैं। इसलिए यीशु ने पहले ही पवित्र आत्मा के बारे में बात की थी, और उसके बाद, उसने चमत्कार किए, और श्रोताओं ने कहना शुरू कर दिया कि वह वास्तव में दूसरी आत्मा की ओर से काम कर रहा था।

हम इन व्याख्यानों को अमेरिका में रिकॉर्ड कर रहे हैं, जहाँ ये चीजें इतनी संवेदनशील नहीं हैं। लेकिन हमारे कुछ अफ्रीकी देशों में, जब आपके पास ऐसी स्थिति होती है जहाँ ईश्वर काम कर रहा होता है, और कोई व्यक्ति कुछ शैतानी शक्तियों को इसका श्रेय देता है, तो आप प्रतिक्रिया देख सकते हैं क्योंकि आध्यात्मिक युद्ध की समझ मजबूत है और समाज के हर हिस्से में व्याप्त है।

बुराई की आत्मा अच्छाई की आत्मा के पक्ष में काम नहीं कर सकती। और अगर आप चाहें तो यीशु बैलिस्टिक हैं। अब, मुझे कहना चाहिए कि यीशु एक अच्छे इंसान हैं।

उन्होंने कभी नहीं कहा होगा कि वे बैलिस्टिक हैं। यह मेरा शब्द है। बस मैं इससे खुश नहीं हूँ।

उन्हें स्पष्ट रूप से रेखाएँ खींचने की ज़रूरत है। वे कहते हैं कि दो राज्य दांव पर हैं। ये दोनों राज्य स्पष्ट रूप से परिभाषित शर्तों के अनुसार काम करते हैं।

एक मजबूत आदमी है, और दूसरा उससे भी ज्यादा मजबूत आदमी है। वह मजबूत के पक्ष में काम कर रहा है, मजबूत के पक्ष में नहीं। और यहाँ, वह इस बारे में बात करता है कि कैसे मजबूत व्यक्ति अंदर आ सकता है; वह दूसरे के मुखिया, शैतान पर हमला कर सकता है, और उसके कब्जे को अपने कब्जे में ले सकता है और उसके क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है और उन चीजों को अपने कब्जे में ले सकता है जो अन्यथा उसकी होतीं।

यहाँ, वह एक ऐसे महल की कल्पना का उपयोग करता है जहाँ कोई व्यक्ति घुस जाता है और जो कुछ भी वहाँ है उसे अपने कब्जे में ले लेता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में इनमें से कुछ तार्किक विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए, यीशु इस बात पर जोर दे रहे हैं कि परमेश्वर का राज्य क्या है। परमेश्वर के राज्य की तुलना अंधकार के राज्य से नहीं की जा सकती।

परमेश्वर के राज्य में, लोगों को आज़ाद किया जाता है। अगर आपको याद हो, तो नाज़रीन मैनिफेस्टो में इन व्याख्यानों में पहले, यीशु ने कहा था कि जीवित परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है, और उसने मुझे बंदियों को आज़ाद करने के लिए अभिषेक किया है। यहाँ, कोई गूंगा है, और वह व्यक्ति चंगा हो जाता है।

मुद्दा शक्ति प्रदर्शन का नहीं है, बल्कि मुद्दा यह है कि यीशु के मंत्रालय में लोगों को मुक्त करना और बीमार लोगों को ठीक करना शामिल है। लेकिन दर्शकों ने इसे गलत समझा। यह एक महत्वपूर्ण विषय है।

क्यों? क्योंकि इसका संबंध यीशु की सेवकाई से है। वह ऐसा नहीं कर सकता, और उसके मिशन की पहचान शैतान के मिशन से नहीं की जा सकती। उसने अध्याय 4 में प्रलोभन के दृश्य में शैतान को हराया। वह अपनी सेवकाई में लगातार दुष्ट आध्यात्मिक गतिविधियों से निपटता रहा है।

विवाद उभर सकता है, लेकिन दो राज्यों, अंधकार का राज्य और परमेश्वर का राज्य, और यह तथ्य कि परमेश्वर का राज्य प्रबल होगा, को समझना सर्वोपरि है। लेकिन मुझे यहाँ यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा पसंद है। यदि परमेश्वर की उंगली से, मैं दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो इस तथ्य की अपील करता हूँ कि वह यहीं परमेश्वर की शक्ति में काम कर रहा है।

वह बेलज़ेबुल की शक्ति से काम नहीं कर रहा है। लेकिन परमेश्वर की उंगली का क्या मतलब है? परमेश्वर की उंगली उन शब्दों में से एक है जिसका इस्तेमाल निर्गमन में किया गया है। निर्गमन के दृश्य के मामले में, परमेश्वर की उंगली काम पर परमेश्वर की शक्ति को संदर्भित करती है। यह संदर्भ भजन 8 में भी दिखाई देता है। लेकिन परमेश्वर की उंगली कभी-कभी किसी ऐसी चीज़ को भी संदर्भित करती है जो परमेश्वर के हाथों से उत्पन्न होती है।

कुछ ऐसा जो परमेश्वर द्वारा लिखा गया हो या जिसकी उत्पत्ति परमेश्वर से हुई हो। मत्ती 12 में, परमेश्वर की उंगली में परमेश्वर की आत्मा की प्रतिध्वनि है। हम में से कुछ लोग यहाँ पहले शब्द का उल्लेख करने के लिए इस शब्द का उपयोग करते हैं।

यदि मैं ईश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो इसका अर्थ है कि यदि मैं ईश्वर की शक्ति से ऐसा कर रहा हूँ, और आप इसे दुष्टात्माओं के कारण मानते हैं, तो क्या आप समझते हैं कि आप क्या गलती कर रहे हैं? आप देखिए, जैसा कि टिमोथी जॉनसन कहते हैं, शैतान से भी अधिक शक्तिशाली उंगली उस पर युद्ध कर रही है और पृथ्वी पर उसकी संप्रभुता, अर्थात् ईश्वर का राज्य स्थापित कर रही है। इस प्रकार, दृष्टांत का अनुप्रयोग। यदि सुनने वाले लोग अब भविष्यवक्ता, अर्थात् यीशु के चारों ओर बनने वाले लोगों में शामिल नहीं होते हैं, तो वे भी बिखर जाएँगे क्योंकि शैतान से भी अधिक शक्तिशाली कोई यहाँ है।

यीशु ने स्पष्ट रूप से बताया कि उसकी सेवकाई क्या है। यह मुझे आयत 27 से जारी चर्चा की ओर ले जाता है। यीशु ने उनकी ओर रुख किया और जब उसने ये बातें कहीं, तो भीड़ में एक महिला थी जिसने ये सारी बातें सुनीं; वह महिला बहुत उत्साहित थी।

उन्होंने कहा, धन्य है वह गर्भ जिसने तुम्हें जन्म दिया और वह स्तन जिस पर तुम बैठी हो। लेकिन उन्होंने कहा, धन्य हैं वे जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसका पालन करते हैं। यह सनसनीखेज होने का समय नहीं है।

यह समय इस बारे में बात करने का नहीं है कि क्या सच है और क्या स्नेहपूर्ण है। लेकिन यह समय इस गंभीर बात पर लौटने का है कि सच्चे शिष्यत्व का क्या अर्थ है। सच्चे शिष्यत्व में परमेश्वर के कार्य को दुष्टात्माओं के कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराना शामिल नहीं है।

यीशु जल्दी से इस पीढ़ी और उनकी समस्या के बारे में बात करना जारी रखते हैं। क्योंकि यह पीढ़ी समस्याओं से भरी हुई है, यीशु कहते हैं। आप जानते हैं, आप ऐसा करते हैं, वे वैसा कहते हैं।

असली बात उनके सामने हो रही है, और वे इसे किसी और चीज़ से जोड़ देते हैं। वे हर चीज़ के लिए संकेत की मांग करते हैं। ठीक है, अगर वे कोई संकेत चाहते हैं, तो उनके लिए एकमात्र संकेत जो उपयुक्त है वह योना का संकेत है।

जिस तरह से वह योना के चिन्ह को चित्रित करता है, वह उनके सुनने वालों के लिए अच्छी खबर नहीं होगी, श्लोक 29 से। और मैंने पढ़ा।

जब भीड़ बढ़ती गई, तो वे सचमुच इकट्ठे हो गए। वह कहने लगा कि यह पीढ़ी बुरी पीढ़ी है। यह चिन्ह ढूँढ़ती है, परन्तु योना के चिन्ह को छोड़ कोई चिन्ह उसे नहीं दिया जाएगा।

क्योंकि जैसे योना नीनवे के लोगों के लिए एक चिन्ह बन गया, वैसे ही मनुष्य का चिन्ह इस पीढ़ी के लिए होगा। दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ न्याय के दिन उठकर उन्हें दोषी

ठहराएगी। क्योंकि वह सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए पृथ्वी के छोर से आई थी, और देखो, सुलैमान से भी बड़ा कोई यहाँ है।

नीनवे के लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएँगे। क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश सुनकर पश्चाताप किया, और देखो, यहाँ योना से भी बड़ा कोई है - पद 33।

कोई भी व्यक्ति दीपक जलाकर उसे तहखाने या टोकरी के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे किसी चौकी पर रखता है, ताकि अंदर आने वाले लोग प्रकाश देख सकें। आपकी आँख आपके शरीर का दीपक है। जब आपकी आँख स्वस्थ होती है, तो आपका पूरा शरीर प्रकाश से भरा होता है।

लेकिन जब यह बुरा होता है, तो आपका शरीर अंधकार से भरा होता है। इसलिए, सावधान रहें कि आपके भीतर का प्रकाश अंधकार न बन जाए। यदि आपका पूरा शरीर प्रकाश से भरा है, और उसका कोई भी भाग अंधकारमय नहीं है, तो वह पूरी तरह से उज्वल होगा, जैसे कि एक दीपक अपनी किरणों से आपको प्रकाश देता है।

दूसरे शब्दों में, अगर आपकी दृष्टि वाकई अच्छी है, तो वही देखें जो आपको देखना चाहिए। लेकिन योना के संकेत से यीशु का क्या मतलब है? मैं यहाँ योना के संकेत से कुछ बातें जल्दी से स्पष्ट कर दूँ। इस बाइबिल विवाद में यीशु वास्तव में यही कह रहे हैं।

जब उसने दो राज्यों की स्थिति के बारे में बताया और उसके पास और भी भीड़ आई, तो उसने उन्हें याद दिलाया कि एक पीढ़ी के रूप में, वे बहुत अच्छे नहीं रहे हैं। उनके सामने जो चीजें हैं, वे वैसी नहीं दिखतीं जैसी वे हैं। क्योंकि जैसे योना ने प्रचार किया था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी इस पीढ़ी को प्रचार कर रहा है।

लेकिन यह पीढ़ी इतनी भ्रष्ट है कि वे सुनेंगे नहीं। एक दिन शीबा की रानी खड़ी होकर उनकी निंदा करेगी, या दक्षिण की रानी, जिसे हम शीबा की रानी के रूप में जानते हैं जो सुलैमान की बुद्धि सुनने आई थी, खड़ी होकर उनकी निंदा करेगी क्योंकि रानी से भी अधिक बुद्धिमान कोई यीशु के रूप में आया है। वह अधिक बुद्धिमानी भरे शब्द दे रहा है, और यह पीढ़ी नहीं सुनेगी।

यह उनके सामने है; उन्हें कहीं यात्रा करने की ज़रूरत नहीं है, और वे उसकी कही बातों पर ध्यान नहीं देंगे। जब योना ने उपदेश दिया तो नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया, लेकिन यह पीढ़ी पश्चाताप नहीं करेगी। वे मनुष्य के पुत्र की बात सुनेंगे और फिर भी मनुष्य के पुत्र के कार्यों के बारे में सभी प्रकार के परिदृश्य बनाएंगे।

यीशु उन्हें चुनौती देंगे। आप देखिए, अगर वे किसी संकेत की तलाश में हैं, तो संकेत वही है जो उनके सामने उपदेश दे रहा है, ज्ञान के ऐसे शब्दों का उपदेश दे रहा है जिसके लिए पश्चाताप की आवश्यकता है, और वे सुन नहीं रहे हैं। न्याय के दिन उनके खिलाफ दो गवाह खड़े होंगे।

एक दक्षिण की रानी है, और दो नीनवे के लोग हैं। ये गवाह दो या तीन गवाहों की परंपरा में सबसे विश्वसनीय गवाह के रूप में उठेंगे, वे उनका न्याय करने के लिए खड़े होंगे क्योंकि उन्होंने वही

सुना है जो उन्हें सुनना चाहिए था और समझने में विफल रहे और उसी का अनुसरण किया। प्रकाश और अंधकार, विपरीतता या कल्पना में, यीशु वास्तव में उन्हें यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि यदि वे इतनी स्पष्टता से देख सकते हैं, तो वे मनुष्य के पुत्र को काम करते हुए देख सकते हैं।

यदि वे इतनी स्पष्टता से सुन सकते हैं, तो वे मनुष्य के पुत्र को बुद्धि के शब्द बोलते हुए सुन सकते हैं, परमेश्वर के वचन जो उनके पास आ रहे हैं। और फिर भी अवधि इतनी कठोर है, अवधि उनकी सोच में इतनी विषम है कि वे कुछ और की उम्मीद करते दिखते हैं, और जब उनके सामने संकेत किए जा रहे होते हैं, तो वे हमेशा एक और संकेत की मांग करते हैं। आखिर, यहाँ मुद्दा क्या है? अभी-अभी एक बड़ा संकेत किया गया है।

यीशु के व्यायाम से एक मूक व्यक्ति को चंगाई मिली। भीड़ का एक हिस्सा, दूसरों के शामिल होने से पहले ही, जो कुछ हो रहा था उसे दुष्ट आध्यात्मिक शक्ति का परिणाम बता रहा था। यीशु यहाँ स्पष्ट रूप से चिह्नों को रख रहे हैं।

श्रोतागण इस कठोर संदेश के हकदार हैं, क्योंकि वास्तव में, परमेश्वर का राज्य यहाँ है, और परमेश्वर की शक्ति यहाँ है। जब परमेश्वर की शक्ति यहाँ है, तो हमें चमत्कारी कार्यों से इतना अधिक प्रभावित नहीं होना चाहिए। नहीं, मुद्दा यह है कि जब परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर का राज्य, जब परमेश्वर का शासन कार्य करता है, तो जीवन बदल जाता है, बीमारों को उनकी चिकित्सा मिलती है, जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता है उन्हें पश्चाताप मिलता है, एक पीढ़ी जो पीछे जा रही है और अंधेरे में फंसी हुई है, उसे यीशु मसीह के राज्य में प्रकाश मिलता है।

यीशु उन सभी लोगों से आह्वान करते हैं जो उस समय उनकी बात सुन रहे थे कि वे इस आह्वान पर ध्यान दें और उस पीढ़ी के जाल से दूर रहें जो गलत उम्मीदों के कारण यहोवा के बच्चों को यहोवा से दूर रखती है। मसीह में मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मुझे नहीं पता कि आप कहाँ हैं और इस विषय पर आपके क्या विचार हैं, लेकिन आप देखिए, आप शायद मेरी आवाज़ में सुन सकते हैं क्योंकि मैं इसे पढ़ रहा हूँ, मैं यीशु की भावनाओं को समझना शुरू कर रहा हूँ जब कोई व्यक्ति अपने काम को शैतान के काम के लिए जिम्मेदार ठहरा रहा है और उसकी प्रतिक्रिया कितनी वैध और निर्णायक होगी। लेकिन क्या आप परमेश्वर की शक्ति को देखते हैं कि परमेश्वर की शक्ति क्या है? क्या आप परमेश्वर के वचन को देखते और सुनते हैं कि परमेश्वर का वचन क्या है? या आप योना के संकेत की तरह किसी संकेत की प्रतीक्षा कर रहे हैं? आप देखिए, योना के मामले में, नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया।

क्या आप और मैं यीशु, दक्षिण की रानी, जो ज्ञान सुनने के लिए दूर से यात्रा करके आई थी, के शब्दों को सुनकर पश्चाताप करने के लिए तैयार हैं? और फिर भी, जीवित परमेश्वर का वचन हमारे सामने है। क्या हमारे पास सुनने के लिए कान हैं? इस परीक्षण को पढ़ते हुए मुझे दोषी महसूस हुआ। मुझे इस बात का दोषी महसूस हुआ कि कैसे कभी-कभी मैं परमेश्वर के कार्य को मनुष्य के कार्य या किसी गलत एजेंट के कार्य के रूप में देखता हूँ।

और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं आज यीशु की शिक्षाओं की विषय-वस्तु को अपनाएँगे ताकि हम उसे वैसे ही देख सकें जैसे वह है। हम जो कुछ भी कर रहे हैं उसे वैसे ही स्वीकार करें जैसा वह है। हम उसके शब्दों को वैसे ही ग्रहण करें जैसे वे हैं।

हम उसके उपदेशों पर विश्वास कर सकते हैं कि वह हमें क्या बताना चाहता है। और हम उसे अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में अपना सकते हैं। और मैं प्रार्थना करता हूँ और आशा करता हूँ कि जब हम ऐसा करेंगे, तो हम पवित्र आत्मा की जीवन-परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव करेंगे।

हम अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य को काम करते हुए देखेंगे। हम देखेंगे कि परमेश्वर अंधकार की शक्तियों और वायु नियंत्रण को दूर कर देगा ताकि दुख की आत्मा, या उस आत्मा का जो भी नाम हो, हमारे जीवन पर कोई शासन या प्रभाव न रख सके। लेकिन हम अपने जीवन के हर पहलू में जीवित परमेश्वर की शक्ति को काम करते हुए देखेंगे।

आप देखिए जब परमेश्वर का राज्य आता है, तो परमेश्वर ही राज्य करता है। यह शांति का राजकुमार है जो काम कर रहा है और प्रभु यीशु मसीह का बचाने वाला और प्रेमपूर्ण अनुग्रह है जो उन लोगों के लिए मूर्त अनुभव बन जाता है जो उस पर विश्वास करते हैं और भरोसा करते हैं। अब तक व्याख्यान का अनुसरण करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

और मुझे नहीं पता कि मैं बहुत ज़्यादा भावुक हूँ या नहीं, और मुझे भावुक होने के लिए आपसे माफ़ी मांगनी चाहिए। लेकिन आप देखिए, मैं प्रभु यीशु मसीह और सुसमाचार के संदेश में विश्वास करता हूँ। और मैं ईश्वर की शक्ति को खोजना और उसका अनुभव करना चाहता हूँ।

और मैं प्रार्थना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप मेरे साथ इस प्रयास में शामिल होंगे कि हम आत्मसंतुष्ट होने से इनकार करें, बल्कि प्रभु यीशु मसीह के वफ़ादार शिष्य बनने के लिए तैयार रहें।

धन्यवाद और अनुसरण करने के लिए ईश्वर आपको आशीर्वाद दे। धन्यवाद।

यह डॉ. डैनियल डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 18 है, बेलज़ेबूब विवाद। लूका 11:14-36।